भगवान बुद्ध के महाश्रावक

उपालि

(विनयधरों में अग्र)

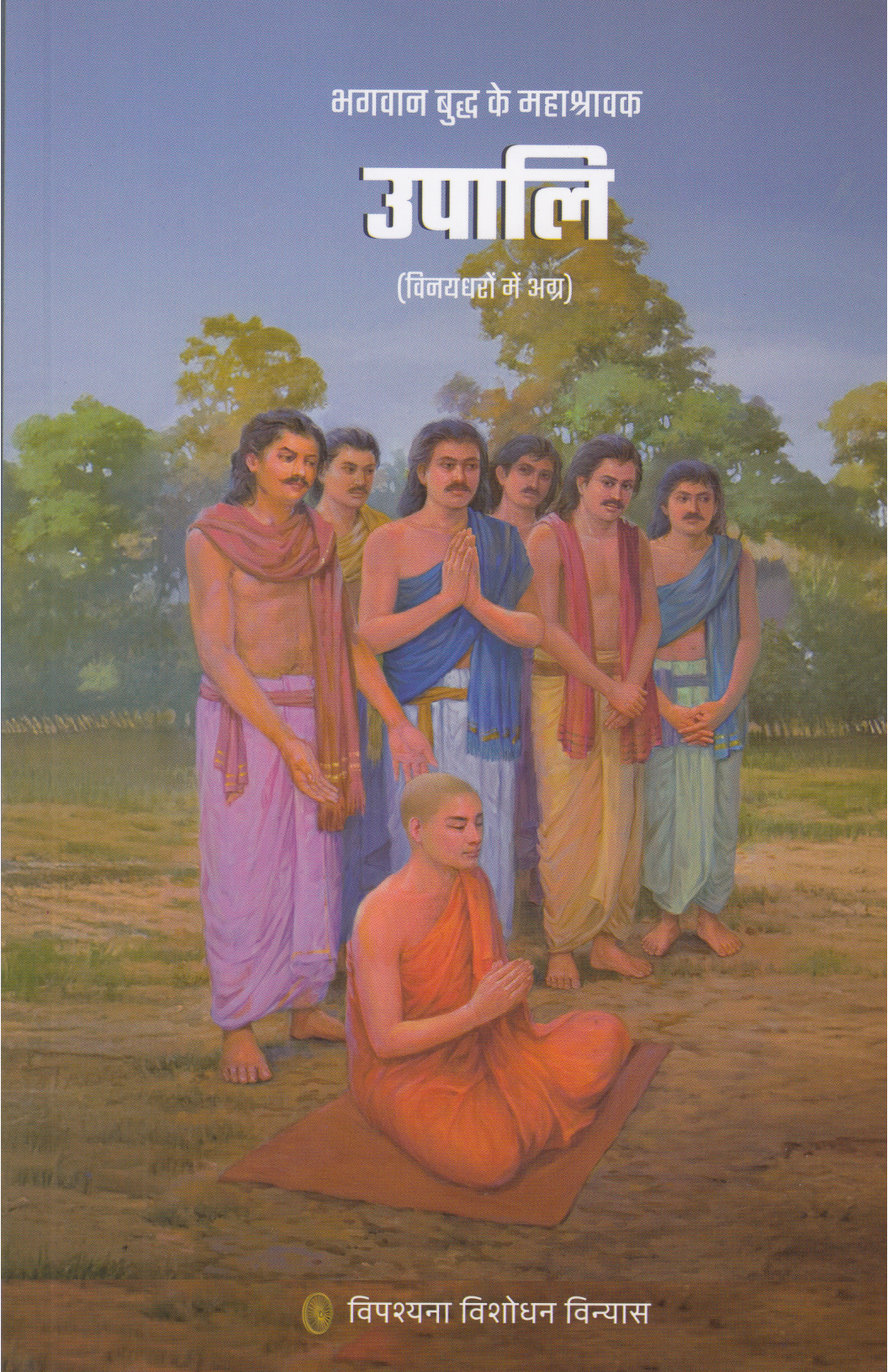

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

उपालि

(विनयधरों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

उपालि

पुस्तक कोड : **H92**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: मई २०१७
द्वितीय संस्करण: सितंबर २०२५

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-392-1

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,
८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,
८४८४८३९८३७, ८४८४८३१८३५
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
विनयधरानं यदिदं उपालि”

****

“भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में विनयधरों में
अग्र (श्रेष्ठतम) हैं ‘उपालि’।”

– अङ्गुत्तरनिकाय १.१.२२८

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

उपालि

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

उपालि

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

भविष्यवाणी 9

राजकुल-अनुग्रह 10

नापित कुलोत्पन्न 10

उपालि सर्वप्रथम प्रव्रजित हुए 10

धर्म-जिज्ञासा 12

संक्षिप्त धर्मोपदेश 12

भगवान द्वारा उपालि को विनयोपदेश 14

विनय नियमों के उद्देश्य 14

विनय नियमों के पारायण का स्थगन 14

उपसंपदा देने वाले भिक्षु के गुण 15

श्रामणेर की रक्षा करने वाले भिक्षु के गुण 16

आश्रयदाता भिक्षु के गुण 16

प्रवास रात्रि की गणना 17

विनयोपदेश काल में बैठने की व्यवस्था 18

दोषारोपणकर्ता भिक्षु में अपेक्षित धर्म 19

दोषारोपण के समय अपेक्षित धर्म 20

संघ-विग्रह 22

संघ-भेद क्या है? 22

संघ-भेद की व्याख्या 23
संघ-राजी और संघ-भेद 24
संघ-सामग्गी (संघ की एकता) 26
संघ-सामग्गी (संघ की एकता) किसे कहते हैं? 26
संघ-सामग्गी के प्रकार 27
संघ-सामग्गी की व्याख्या 28
विनयधरों में अग्र उपालि 29
विनयधरों में अग्र 29
योग्य विनयधर के गुण 29
उपालि की पहचान 31
विविध प्रकरण 33
संघ-भेद करने के दुष्फल 33
मातृ-हंता प्रव्रज्या के योग्य नहीं 33
पितृ-हंता भी प्रव्रज्या के योग्य नहीं 34
सुनिश्चित निर्णय 34
धम्म-संगीति 36
भगवद्वाणी का समयपूर्व संगायन क्यों? 36
संगायन परिषद का स्वरूप 37
उपालि ने उत्तरदायित्व संभाला 37
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु 39
विपश्यना साधना केंद्र 40

प्रकाशकीय

आयुष्मान उपालि का जन्म महाराज शुद्धोदन के सेवक नापित परिवार में हुआ था। बचपन से ही वहां राजकुमारों का साथ भी उन्हें उपलब्ध रहा। जब राजा भद्दिय अनुरुद्ध आनन्द आदि पांच राजकुमारों के साथ प्रव्रजित होने गये तब उनके साथ उपालि भी था। राजकुमारों के निवेदन पर भगवान ने सबसे पहले उपालि को ही प्रव्रजित किया।

प्रवज्या के कुछ दिनों बाद आयुष्मान उपालि भगवान के पास धर्म पूछने गये, तो भगवान ने उन्हें सम्यक धर्म के लक्षण बताये और नये साधक को अरण्य में एकान्तवास से मना किया। भगवान पद्मुत्तर सम्यक संबुद्ध से प्राप्त वरदान के फलस्वरूप आयुष्मान उपालि की रुचि विनय (भिक्षुओं के लिए नियम) में विशेष थी। भगवान को नमस्कार करते हुए उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है – शास्ता द्वारा देशित विनय को मैं हृदय से धारण कर रहा हूं। विनय को हमेशा नमस्कार करता हुआ ही विहरता हूं। इसीलिए शास्ता ने उन्हें विनयधरों में अग्र की उपाधि दी।

विनयपदों के उद्देश्य के बारे में आयुष्मान उपालि द्वारा प्रश्न करने पर भगवान ने कहा उपालि संघ की अच्छाई के लिए और दुष्ट व्यक्तियों का निग्रह करने के लिए विनयपदों की प्रज्ञप्ति की गयी है। इसके साथ ही भगवान ने उपसम्पदा देने वाले भिक्षु के गुण, आश्रयदाता भिक्षु के गुण, विनयोपदेशकाल में बैठने की व्यवस्था, आपस में दोषारोपण आदि के बारे में विस्तार से बताया।

जब आयुष्मान उपालि ने 'संघ-भेद के बारे में पूछा तब संघ-भेद की व्याख्या करते हुए भगवान ने संघ-राजी (संघ में दलबन्दी) और संघ-भेद में अंतर स्पष्ट किया। संघ-सामग्गी (संघ-एकता) की विस्तार से व्याख्या करते हुए भगवान ने संघ-सामग्गी के प्रकार भी बताये। भगवान ने मातृ-हन्ता और पितृ-हन्ता को प्रब्रज्या के लिए अनर्ह बताया। एक भिक्षुणी के गर्भिणीभाव के संबंध में जांच के लिए भगवान ने आयुष्मान उपालि को ही जिम्मेदारी दी जिसका निर्णय उन्होंने उपासिका विशाखा

के सहयोग से किया।

बुद्धवाणी के संगायन के समय विनय का उत्तरदायित्व आयुष्मान उपालि को ही सौंपा गया। भंते महाकश्यप, अध्यक्ष के पूछने पर कि क्या आयुष्मान आनंद पर्याप्त नहीं हैं? परिषद के सदस्यों का तर्क था कि श्रावक भिक्षुओं में भगवान ने आयुष्मान उपालि को अग्र पद पर प्रतिष्ठित किया है। इसलिए वे ज्यादा उपयुक्त हैं। इसलिए विनयपिटक के संपादन का श्रेय उन्हें जाता है।

विपश्यना विशोधन विन्यास